डा रुचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, शिवाजी कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
ms.ruchira.gupta@gmail.com

कर्मभूमि सार

प्रेमचंद ने कर्मभूमि उपन्यास में वर्ग भेद की भावना को समाप्त कर एक सुखी और समान विचारधारा वाले समाज की परिकल्पना की है । उन्होंने उपन्यास को पांच भागों के अंतर्गत विभिन्न परिच्छेदों में विभक्त किया है।

क्वींस कॉलेज में दसवीं कक्षा का छात्र अमरकांत , काशी के धनी प्रसिद्ध लाला समर कांत का सुपुत्र है । कॉलेज के नियमानुसार प्रत्येक माह की 7 तारीख को फीस जमा करनी होती थी अन्यथा 21 तारीख को दुगनी फीस देनी पड़ती थी। ऐसा न करने पर नाम कट जाता था । एक बार मार्च की 7 तारीख को सभी लड़के फीस और परीक्षा के व्यय के रूप में ₹40 रुपए जमा करा रहे थे। अमरकांत फीस देने में असमर्थ था क्योंकि उसके पिता धनी होने पर भी कंजूस प्रवृति के थे और चाहते थे कि अमरकांत उनके लेनदेन के व्यापार को संभाले। अमर का मित्र सलीम बिना कहे सारी बात समझ जाता है और उसकी फीस जमा करवा देता है। अमरकांत की मां की मृत्यु के उपरांत उसके पिता पुनर्विवाह कर लेते हैं । विमाता अमरकांत के प्रति द्वेष रखती थीं किंतु उसकी पुत्री नैना और अमरकांत में अपूर्व स्नेह था। विमाता भी जल्दी ही पंचतत्व में विलीन हो गई।

अपने पिता से बिल्कुल विपरीत विचारधारा के कारण अमरकांत सामाजिक कार्यों में अधिक रुचि लेता था । पिता का मानना था कि गृहस्थ जीवन अमरकांत को सही रास्ते पर ले आएगा अतः वे उसका विवाह लखनऊ की धनी विधवा की पुत्री सुखदा से कर देते हैं। सुखदा और अमरकांत के विचारों में भी साम्य नहीं था। भातृ प्रेम के कारण नैना पिता से ₹20 लेकर स्कूल की फीस जमा कराने के लिए अमरकांत को देती है किंतु अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण वह रुपए लेने से मना कर देता है और एक कोठरी में बैठकर चरखा कातने लगता है जिससे अपना खर्चा निकाल

सके। लाला समरकांत यह देखकर क्षुब्ध होते हैं। सुखदा पति को घर छोड़ लखनऊ में अपनी मां रेणुका के पास रहने और उनके खर्चे पर पढ़ने का परामर्श देती है जिसे वह अस्वीकार कर देता है।

अपने परिश्रम से अमरकांत ने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और पिता व पत्नी की इच्छा के प्रतिकूल जाकर कुछ व्यापारियों के यहां हिसाब किताब देखने का कार्य करने लगा। पत्नी सुखदा के समझाने पर वह शीघ्र ही अपने पिता के व्यवसाय में उनका हाथ बंटाने लगा। इसी बीच सुखदा की मां रेणुका देवी लखनऊ छोड़ काशी में रहने का निर्णय करती हैं और अपने लिए मकान आदि देखने के लिए अमरकांत के पास ₹1000 भेजती हैं। अमरकांत सारा प्रबंध मात्र ₹500 में ही करवा देता है और मना करने पर भी शेष रुपए अपनी सास को आग्रहपूर्वक लौटा देता है। रेणुका देवी उसकी ईमानदारी और कार्य कुशलता से प्रभावित होती हैं। अमरकांत उनके द्वारा मिलने वाले ममत्व से भावविभोर हो जाता है और उनके मध्य मां बेटे का संबंध विकसित हो जाता है। कभी- कभी रेणुका देवी उसकी आर्थिक सहायता भी कर देती हैं।

समाज सुधार और आंदोलन में रुचि होने के कारण अमरकांत जनसभा में जोशीला भाषण देता है जिस कारण पुलिस लाला समर कान्त को पुत्र पर निगरानी रखने का आदेश देती है। पत्नी सुखदा के समझाने पर अमरकांत अपना व्यवहार बदलने का वचन देता हैं। एक दिन काले खां नामक व्यक्ति 10 तोले सोने के चोरी के कंगन है बेचने उसकी दुकान पर आता है और बदले में ₹200 लेना चाहता हैं और अंत में आते-आते ₹5 में ही बेचने के लिए तैयार हो जाता है किंतु अमरकांत चोरी का सामान लेना अनुचित समझता है और उसे डांट कर भगा देता है। उसे अपने पिता पर घृणा आने लगती है किंतु कुछ ही समय उपरांत दुकान पर आई एक वृद्ध पठान स्त्री से यह पता चलने पर कि उसके पिता अपने पुराने नौकर की विधवा को हर माह ₹5 की सहायता देते हैं, पिता के प्रति उसकी धारणा में बदलाव आता है। वह ₹5 निकालकर विधवा पठानिन को दे देता है और अंधकार होने के कारण उसे रिक्शा में बैठा स्वयं उसके घर तक छोड़ने जाता है, लौटते समय वृद्धा उसे अपनी पोती सकीना के हाथ का काढ़ा सुन्दर रुमाल भेंटस्वरुप देती है।

एक दिन समर कांत की दुकान पर शराब पीकर दो गोरे और एक मेंम आई और जब वे सोने की जंजीर बहुत कम पैसों में बेचकर लौटने लगे तभी मुन्नी भिखारिन ने अपने चाकू से दोनों गोरों को घायल कर जमीन पर लिटा दिया। मेम दुकान में छिप गयी। पुलिस के आने पर पूछताछ करने

से पता चला कि कुछ महीने पहले तीन गोरों ने मिलकर मुन्नी से बलात्कार किया था तभी से वह प्रतिशोध लेना चाहती थी। उस पर मुकदमा चला किंतु अमरकांत , सुखदा, रेणुका , डॉक्टर शांति कुमार , सलीम इत्यादि के प्रयासों से वह छूट गई और अपने परिवार के साथ घर न लौटकर हरिद्वार चली गई।

समय के साथ सुखदा ने पुत्र को जन्म दिया। समरकांत ने प्रसन्न होकर सारे समाज को दावत दी । एक दिन बच्चा कुछ बीमार था तब वृद्धा पठानिन उसके लिए ताबीज लेने की बात कहती हैं जिससे वह जल्दी ठीक हो जाए। अमरकांत जब ताबीज लेने उसके साथ गया तब रास्ते में बुढ़िया ने उससे बातचीत में आश्वासन लिया कि वह सकीना द्वारा काढ़ें गए रुमाल और टोपियां बाजार में बिकवा देगा जिससे उनका घर चल सके। बार बार मिलने से अमरकांत , सकीना के प्रति आकर्षण अनुभव करता है।वह उसके कढ़े रुमालों को अपने मित्र को बेच देता है और पैसे लेकर सकीना को देने उसके घर जाता है । वहां बातचीत में दोनों एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हैं । एक दिन पठानिन अमरकांत को बताती है कि उसने सकीना की शादी निश्चित कर दी है जिसे सुनकर अमरकांत को धक्का लगता है। वह वृद्धा की मदद की पुकार को भी अनसुना कर देता है। सलीम ने उसे सकीना से प्रेम ना करने की सलाह दी पर वह नहीं माना। वह सकीना के पास जाता है। वहां सकीना ने वादा किया कि वह अमरकांत से ही विवाह करेगी। धीरे-धीरे उसकी जीवनचर्या बदल गई। वह अधिकांश समय डॉक्टर शांति कुमार द्वारा खोले गए सेवाश्रम में पढ़ाने लगा । इसी बीच में स्थानीय म्यूनिसिपल बोर्ड का सदस्य चुना गया ।

वह पिता के व्यापार की उपेक्षा करने लगा जिससे क्षुब्ध होकर समरकांत उसे घर से चले जाने के लिए कहते हैं। वह सुखदा , नैना और बूढ़ी नौकरानी सिल्लो के साथ दस रुपए किराए के मकान में रहने लगा और जीवकोपार्जन के लिए पीठ पर खादी लादकर बेचने लगा। एक दिन अमरकांत को सकीना के साथ अकेले अपने घर में देखकर वृद्धा पठानिन क्रोध में बुरा-भला कहते हुए अमरकांत को घर से बाहर निकाल देती है। अपमानित अमर सब-कुछ छोड़ कर उत्तर दिशा में गंगा के पास एक गांव में रहने लगता है । वह वहां एक पाठशाला खोल लेता है। यही उसे बूढ़ी काकी सलोनी और मुन्नी भिखारिन मिलती हैं।

तीन महीने बाद उसने अपना कुशल समाचार देते हुए सकीना , सलीम और नैना को पत्र लिखा जिसके उत्तर में उसे पता चला कि उसके पिता समरकांत अब धार्मिक कार्यों में अधिक प्रवृत्त हो गए हैं। वे काशी में एक ठाकुरद्वारा बनवा रहे हैं और पठानिन को पांच के स्थान पर पच्चीस रुपए दे रहे हैं। ठाकुरद्वारा के पूर्ण होने पर पंडित मधुसूदन को पुरोहित बनाया गया। कथा सुनने वालों में कुछ हरिजन भी थे। उनके मंदिर के दरवाजे के निकट बैठने पर पंडित ने विरोध किया जिससे झगड़ा होने लगा। अगले दिन डॉक्टर शांति कुमार ने हरिजनों को खुले मैदान में प्रेरणाप्रद भाषण के माध्यम से संबोधित किया और समाज से अपना अधिकार मांगने के लिए प्रेरित किया । उनके नेतृत्व में सभी ने ठाकुर द्वारे में प्रवेश करने की कोशिश की परिणामस्वरूप दोनों पक्षों में लड़ाई हुई और शांतिकुमार लाठियां लगने से बेहोश हो गए और उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। । नैना डॉ शांति कुमार के विचार से सहमत थी और समाज में वर्ग भेद मिटा एक आदर्श समाज के सपने देखती थी वह चोरी छुपे शांतिकुमार को देखने अस्पताल भी जाती है। लौटते समय वह देखती है कि लाला समरकांत के कहने पर पुलिस उपद्रव शांत करने के बहाने से लोगों पर गोलियां बरसा रही थी। सुखदा भी समरकांत से असहमत थी अतः अपना अलग संगठन बना लेती है। अन्त में लाला समरकांत को झुकना पड़ता है और वे ठाकुर द्वारे के द्वार सबके लिए खोल देते हैं। अपनी बेटी सुखदा और डॉ शांति कुमार की समाजसेवी की भावना से प्रसन्न होकर रेणुका देवी उनके इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए एक ट्रस्ट बनवा देती हैं।

समरकांत , नैना का विवाह नगर के रईस घनीराम के पुत्र मनीराम से करवा देते हैं। सभी प्रकार के व्यसनों का आदी मनीराम किसी भी दृष्टि से नैना के लिए योग्य वर नहीं था अतः वह समाज सेवा के कार्यों में लग गई। सुखदा, नैना, डॉ शांति कुमार, रेणुका देवी हरिजनों के उद्धार कार्यों में लगे थे। गरीबों के लिए मकान बनाने के लिए म्यूनिसिपल से ज़मीन मांगी गई । ज़मीन न मिलने पर नगर में आंदोलन हुए जिसमें सुखदा गिरफ्तार हुई। सलीम परीक्षा उत्तीर्ण कर आई .ए .एस बनकर गंगा के किनारे उसी गांव में आता है जहां अमरकांत था। उससे अमरकांत को काशी का समाचार मिलता है। अमरकांत जिस गांव में रह रहा था वहां के जमीदार महंत जी किसानों पर बहुत अत्याचार करते थे । फसल ना होने पर भी किसानों से बलपूर्वक लगान वसूल करते थे। अमरकांत के अनुरोध को भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया था । अमर , अपने मित्र सलीम को लेकर हाकिम मिस्टर गजनवी से भी मिला पर वहां भी कोई अनुकूल उत्तर ना मिल सका । अमरकांत

ज़मीदार और सरकार की अनीतियों के विरोध में किसानों की एक सभा में भाषण देता है जिसके परिणाम स्वरूप आंदोलन भड़क उठता है। गजनवी , सलीम को आदेश देकर अमरकांत को गिरफ्तार करवाते हैं और पुलिस किसानों पर अत्याचार करती है। समरकांत वहां अमरकांत को देखने आते हैं और घायल किसानों को एक हज़ार रुपए दान में देते हैं। समरकांत के प्रयासों से अमर को लखनऊ जेल में जहां सुखदा भी थी भेजा जाता है।

समरकांत, सलीम को भी उसके कृत्यों के लिए लज्जित करते हैं। सलीम कई गांवों का दौरा कर किसानों के पक्ष में रिपोर्ट बनाकर जिला हाकिम के पास भेजता है। सरकार का विरोध करने पर सलीम को नौकरी से निकाल दिया गया। अब वह गरीब किसानों की मदद करने लगा। मिस्टर घोष के नेतृत्व में पुलिस किसानों से लगान के रुप में उनके पशु नीलाम करने लगी। सलीम के विरोध करने पर मिस्टर घोष उसे हण्टर मारते हैं। क्रोध में सलीम उनकी नाक पर मुक्का मारता है। सरकारी कर्मचारी को मारने के अपराध में उसे गिरफ्तार कर लखनऊ जेल भेज दिया जाता है। सलीम के जेल जाने के पश्चात आंदोलन का नेतृत्व सकीना संभालती है। पुलिस बुढ़िया पठानिन को अपराधी मानकर उसे अपने साथ ले जाती है। लाला समरकांत, रेणुका देवी, डॉ शांति कुमार, सभी सरकार के विरोध में भाषण देते हुए गिरफ्तार हो जाते हैं। म्यूनिसिपैलिटी के दफ्तर में उस समय गरीबों को मकान बनाने के लिए जमीन देने के बारे में बोर्ड की मीटिंग हो रही थी । नैना भीड़ का नेतृत्व करते हुए दफ्तर की ओर चल पड़ती है। मार्ग में उसका पति उस पर गोली चला देता है और भाग जाता है। जब यह समाचार मीटिंग में पहुंचा तो वहां खलबली मच जाती है। भीड़ को ऐसी स्थिति में संभालना मुश्किल हो जाता है । सेठ धनीराम स्वयं वहां आकर म्यूनिसिपैलिटी के सभी सदस्यों से अपनी जमीन गरीबों को मकान बनाने के लिए देने की घोषणा करते हैं । इस फैसले से सभी स्वर्गीय नैना देवी की जय जयकार करने लगते हैं । बोर्ड के अनुरोध पर सभी कैदी छोड़ दिए जाते हैं। बड़े साहब सलीम, अमर आदि समेत पांच आदमियों की एक समिति किसानों के लगान माफी पर विचार करने के लिए बना देते हैं । पइस प्रकार संघर्ष समाप्त होता है और समाज में वर्ग भेद भी मिटने से सर्वत्र प्रसन्नता व्याप्त जाती है ।